

नगराहमिहिवधशजनश्रु ॥ २५ ॥ अकस्मात्तगजा दीश्वमदिखादि मवननटा स्वा
मिमवलादववर्षात ॥ सात्तिवृष घटि तगजादिश्वमदिखादिनां कलावा मर्गदया
त ॥ अथवामहावर्ति कला गजावक ॥ २६ ॥ अकस्मात्तसर्पयतननवा अदिमृत्पद्या
टेनवा अकस्मात्तगजावकला तस्वामिमृत्पद्या अन्त ॥ सात्ति तस्या ऊरुयात ॥ कलसदय
वलिनेवययययय विगति ॥ २७ ॥ श्री साहकासम मिध अथामार्ग पिहला सेर्ययतन सु
किंकोमादायवलिनेवययय ॥ यदु सात्तिकमन्त्रेन दाने तासपायय ॥ तिलेयुर्धु दिव
अगर्गव ॥ २८ ॥ पतिष्ठा कंयतनेवययय ॥ उवाहिसूखसात्तिक यंयवकादिपथनेयूनल

वलसूययाहलीकं प्रथमकं मूर्द्धवाशार्च्यं ॥ २४ ॥ अकस्मात्तुलनायनं अलयाय
 धनदय सान्निभजार्ग ॥ दिव्यदान ४ शास्त्र ॥ २५ ॥ कथं वेति काया वा वीजना
 धित नाना जायत वा वाधित वीजन बाहते यत्तु मृत्युमास दयन सानि सदस्मा
 मस्मा मि वलि दयत ॥ कथं कन ॥ अथ वामासा इति रुद्रयाग ॥ दानकं न पाप २
 घृत पूविर्हि दिव्य १० गुरु शास्त्र ॥ २६ ॥ दिव्याह सूर्यय विमलुल धूमकतु निर्घात
 कस्य यत नायादि उल्कापातम वा विश्वनाय गित काकादिने श्व गाला इति दयाधा
 वमवकाय हि वा अर्ग ॥ ॥ यय कन तुल कथा प्रता निग यपायन ॥ विस्वत

वलदान २३ यत्यथ नकादिना वयवाहयत ॥ कन मृति वलि पूजा वाधित लवक
 रिक्त वा वायं पूजनम् ॥ २७ ॥ दवाय यनाना निमित्त पाप ॥ यत्तु वज्रिवति वर्षमास
 नमृत्यु ॥ तस्य सानि दय पूजनम् ॥ वहाम ॥ स्व व लुदान लका मा विपूजनं दिवलि
 वप्रवाल यत ॥ २८ ॥ नाना रुत पूषका ययवति कलादिन मृत्यु स्वाभ्यादिकलय
 २९ ॥ तस्य सानि वज्रत घटित न वयवादि दान उ दान वलि पूजा प्रतन सानि ॥ ३०
 ॥ मानूख साग वील दय कन्या कमान अथवा नलना वीवा जायत न व मादय व १५
 एवत् स्व कल हन्ता धन दय क नर्द वा प्रतन सानि दया तीर्थ गत्वा स्नानं कल सप्र

जा ता वा अक्षत व प्रहया ० का वथ दाने कां ग पा प घृत कि व पुर्णु वा उ ग वृ प व न्य वि
 म्व सु व पु र्णु य ग व ठिकां सूर्य वि म्व न का ति व ता म्पा प दा त र्थ की व श ऊ र्ण व त द ग नि
 रु व ति ॥ २२ ॥ य व गि ल य द न ग अथ वा वे र्ण र ङ्ग र ङ्ग स्त न सा नि रु रु या त ॥ २३ ॥
 मे ग न रु त द टि त र्थ व न का वि धि ना र्थ व न का या ० स ध म्पू लु वी क ष्ट ग ल य के का मा
 वी ष्ट का न य त त ने सा नि ॥ २४ ॥ रु मि का नि नि का नि म्वा अं ध का व सु मा कू लं इ दि ने
 वि वि धि व पु र्णु ष्टे व न क वा रु र्ग क ॥ २५ ॥ अ पु र्णु वा रु र्ग क पू र्ण वा रु र्ग क वा
 रु र्ग क व वि य न रु इ रि दं स क वि द म म ॥ २६ ॥ का रु ग प स घा त क ग स्ना ना द वा अ

८

व ध न द र्थ ॥ २७ ॥ ग न वा रु र्ग क म हा इ ष ॥ गृ ह म अ कान मृ त् ॥ २८ ॥ र वां ग नि ॥ ता म्
 या प य न य घृत पु न यि त्वा न ज ग ल स्त गृ ह रा व क्त्वा म लु ल म अ य ति वा य दा त य सु
 व र्णु द दि ण क म्प त ८ व लि पू जा क व स द य पू ज य त् ॥ २९ ॥ य व ग य धू र्ण क्त्वा र व ष्ट दा व रा
 क्त्वा का क गृ ह य वा द य त ॥ ३० ॥ अ पि वा द द क क व स क्त्वा य व लि ने व य प ष्ट ति ग र्वा लः
 स्त न व लि रु ज मा न नि वं ष्टि नि न क ग याल क ने ॥ अथ वा का क स गृ ह व लि द ला ३
 व ल्प मि नि य त ॥ ३१ ॥ कू सु म वा वि त् अ न्ना कू सु म य र व ति ॥ य य थो पि वि न य ति ॥ मा म्
 य य द ध न ध नो वि न स य ति ॥ ग नि व लु वि म्व कां ग पा प प वि पु वि त इ व द दि ण व लि

युवालश्रकावयत् ॥ ३१ ॥ हयिलि सूर्यलाह सूर्ययव एनगृह गृहयति शूर्याय
 प्रथो विम्वविनयति शारं वापयमासन गानिकि श्रुयाग चिद्वस्व सूवर्षु दानः
 स्वयवतायुजन संघराजं वज्रनगानि ॥ ३२ ॥ दवधो निगपुश्रु ३ अन्तरा
 न्यागदस्त्राच दव्वा सर्वमेदयियगार्थं सर्वयवानां पुश्रुत पूर्ववत् नवमा ३३ १०
 मानुष्यनिबोदं कयादादीनां यस्य गृहयवगयत् स्वामिमृत्युषट् मासदासा
 निकि श्रुयाग यंचनका विधानेन येन विम्वसहितं सूवर्षु ददिकि न मेदावलिश्र
 दापयत् ॥ पूर्वविमूर्खदानराजं विधानात् ॥ ३३ ॥ मन्दिपन गवतायाममध्व

अपूर्वयद्विनिनस्याति वनवनादिष्ववगयत् स्वामिमृत्युषट् मासां शकवगमृद
 प्रथनवा गानिकावयत् ॥ कवगयुजन नवो ह्रमददिकि न विवयायमकं वमुश्र
 प्रदाययत् ॥ ३४ ॥ कावमृत्युजायतेन स्वामिमृत्युषट् मासां शकवग गानिकि श्रुया
 ग दानराप्रैयार्थं ॥ द्युतपूर्वितं रज्जुददिकि न यकालयत् ॥ ३५ ॥ दिनास्वावातायजाय
 तं तेन वत्सासन स्वामिमृत्यु ॥ गानिकि सयवजाता वदाने अथवा दगम्लतामुपायवका
 कतपूवयत् दिव्यतरं द्वादशवतिका नि सूवर्षु ददिकि न ३६ प्रदाययत् ॥ राजसक
 लानां किक ॥ ३७ ॥ यस्य गृहयववयवा तथेव दिदिहतीतवद्रुतवप्राक ॥ यत्मासनवि

यथास्वामिः अध्वामुक्तिः सूर्यपातनार्थं वरुणं तस्य गान्तिः इत्यात् यद्गुर्विधाय
 धाम किना पूर्ववत् ॥ ३८ ॥ गृहं वक्तुं विदुषा फलं न ववर्ष न नरुवति स्वासिमृष्यः ॥
 नियतं वक्तुं यत्नं रुमिमृत्तिका मादाय ऊलवलि मर्यादितं ॥ अन्यथा मृत्तिका मा
 दाय पूर्ववलि धातुं रुविधानं न रुमिदानं सुवर्षदानं महावलि गृहकलितदानं ॥ ३९ ॥
 कामाविष्टं संधराज्यं यथा गतिः ॥ ३९ ॥ गृहं सूर्यपातनं स्वासिमृष्यः ॥
 सवर्षने च गान्तिका वयं ॥ सुवर्षदानं वलिधालं वतिका २० संधराज्यं ३ कालं
 यत् कुलं सुधनं ३ कुर्यात् ॥ ३० ॥ सवीवजातिं वदहं सफमासनं जीवति गान्ति

इत्यात् ॥ ३१ ॥ गृहं सूर्यपातनं मृत्तिका अकस्मात् गृहं रुजं नाना गद्वानयत नाना
 जेदुयवर्णं कीर्तादि रुजं न धुजयत न सिमादि रुजं न च ॥ सफमासनं जीवति तस्य
 सान्निध्याकं विधानं युजा ॥ गान्तिं यत्नितं लघुपूर्ववलि हामर्षं वक्तुं ३ कालं
 यत् ॥ गान्तिः ॥ ३२ ॥ यस्या गृहं गजांश्च महिखां च उक्तं मूढुः सितसि वदहं पाठ
 ने उद्यानवाला वनवा ककलुवा ॥ गृहं यवगनं वर्यवर्णं कवनं स्वासिमृष्यः गान्तिः
 इत्यात् ॥ दार्पिणं ने वयं सहितानि बाल विष्क दधि इत्यर्मा सवक्तुं मम वमय यथ

थकयविष्टविर्ग ॥ कजतघटित खज दानेराक ॥ ३३ ॥ सुभाकी ॥ ३३ ॥ हामकालयीदीसं
 चर्तुखवति ॥ हामगन्धदीनारवति इन्धनानावर्तुसमूहव ॥ कजमानानजीवति मृ
 त्युनावर्षकल ॥ निरुद्धयागु सुवर्तुदानराक ॥ ३३ ॥ यस्यागृहमीनपाक मुतावा
 यतितावायुनूयस्य खनरुभावनजीवति वर्षद्वयल ॥ निरुद्धयागु इववज
 गल ॥ अकत राक ॥ ३३ ॥ घटदानसुवर्तुदानराक ॥ ३३ ॥ संगमतदागलयायस्कविष्टा
 कृत्ययगाल्यानानावर्तुताय दृष्टलसयामृष्ट ॥ निरुद्ध कलसयुजनं क्लृप्तवव
 लिक्तयवलि नागयुजा ॥ कललदायाधन यययुष्टितिल इष्टी मालायागकुष्ठसर्व

२२

इलयदानांग कृपनागयुजनजलहाम ॥ दानशान्मु राजमघृतयुनिर्दानकलसा
 निरुवति ॥ ३३ ॥ यस्याकृत्यवातिकाया धानाविहीवायितन ॥ यस्यायजायतंगराया
 वागृहस्वामिंवा मिथक ॥ यवमासनवा यवाधनवा तस्यसान्निधानवलि तीर्थव
 लिदानकांगयायवत्य विम्ब ॥ घृतपुष्टुयुनेदिनवागर्द्धव यवविदिनवायथम् ॥
 वलिसमयवककालयम् ॥ ३३ ॥ यस्यागृहउद्यान गृहसमीपवा ॥ ३३ ॥ खरुलपाक
 स्वामिमृष्टययश्च ॥ यस्यागानिसूवर्तुदि कुरुम्बउयस्मित नानावपुर्वीयायि
 दाययम् ॥ ३३ ॥ खवापितक्लृप्त ॥ कगयुजनकवलिषदान ॥ रिक्तावायराक ॥ ३३ ॥ दा

दापयत् कामात्री पूजनं ३३ नमः ॥ ३८ ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ
 न्निरुद्धि न नजीवति यश्चाथ गन्तुं शक्यते ॥ ३९ ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ
 सक्तिता दिव्ये दाने दवस्तु नमः पूजा महावलि महावक पूर्ववत् ॥ ४० ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ
 ताकावायः अकथनं ॥ ४१ ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ १३
 वार्था वातायः अदिष्टे वायमदन्नाय जायते ॥ ४२ ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ
 थानवलि तीर्थवलि नागवलि कलंग पूजनं कलसकलं रुमिवाति कार्या धादय
 त रुगवलि वक गान्ति ॥ ४३ ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ

वात्मी कः उत्पन्नं वरुधनं कथं नानाभागी अन्निरुद्धि न नजीवति यश्चाथ गन्तुं शक्यते ॥ ४४ ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ
 हारुथत् ॥ ४५ ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ दानं वज्रं सुवर्णं सफेदं त्रिदशं नव
 यरुदानं हारमं कृत्वा पूजयेत् दवावयवसुखं वीनवा अ वात्मी कः उत्पन्नं वरुधनं कथं नानाभागी अ
 र्यं दक्षिणाय दानं गान्तिरुवति निश्चितं ॥ ४६ ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ सर्वभागा
 निरुद्धि न नजीवति यश्चाथ गन्तुं शक्यते ॥ ४७ ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ दानं वज्रं सुवर्णं सफेदं त्रिदशं नव
 शिवाचार्य दानं ॥ ४८ ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ सफेदं त्रिदशं नव गान्तिरुवति निश्चितं ॥ ४९ ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ
 न्निरुद्धि न नजीवति यश्चाथ गन्तुं शक्यते ॥ ५० ॥ अकस्माद् दवावयवसुखं वीनवा अ

यनक यामहस्य नेमय विविध यश्चिमहवित वायवनील उरुवधीत वीगाननित
मस्य सर्वयुक्त वेनाय चरावगानिकमम दानवमु उयस्तु मस्य पूर्वशि मखयुक्त
तममलकलस चिक्रिष्टल यम कयाल वडीव वलिवय वदा मिषकानलिखन काना
यपूर्वविष्टल मस्य मनुमंभुला रुति नमस्य खन यश्चिमकया ल वायवधुज अ २४
धमकगविष्टल मस्य कल्यासन कलगविष्ट अर्धवल सखवजगाशत वन्दमंभुलास
नक्त यश्चाय विगत यम ववदहस्ताना अमयत उक्तवर्ष विराय च वरुत रवर्त रा
वयत नायगत किया नक्त वायव्य विराय ॥ ॥ वृत्ति उल्लागल कर्ण अर्था विलाकि त
१ मंजरी

ध्वजराशि तत्तावाय विष्टुक्त समाक ४॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

७१ ॥

SEAMONT 1354

135

OLD HALL

OLD HALL